eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

आजमगढ़ नगर में ठोस अपशिष्ट : उत्सर्जन एंव निस्पादन

डॉ0 धर्मेन्द्र प्रताप यादव[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, डी0 ए0 वी0 पी0 जी0 कालेज आजमगढ़

Received: 24 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Oct 2024, Published : 31 Oct 2024

Abstract

विगत शताब्दी में जनसंख्या विस्फोट, तीव्र औद्योगिक करण, नगरीकरण तथा अन्य सामाजिक–आर्थिक क्रियाकलापों में बेतहाशा वृद्धि के कारण जहाँ पर्यावरण क्षरण और प्रदूषण की समस्या विराल हुई है, वही ठोस, तरल एवं गैसीय सभी प्रकार के अपशिष्टों का उत्सर्जन भी अत्यधिक हुआ है। आज के वैज्ञानिक एवं औद्योगिक काल में ठोस अपशिष्टों का उत्सर्जन तथा मानव के सामाजिक–आर्थिक विकास में धनात्मक सम्बन्ध होता है क्योंकि ठोस अपशिष्टों का उत्सर्जन वास्तव में आाधुनिक समृद्व भौतिकवादी समाज की ही देन है। क्रमशः बढ़ती उपभोग की पिपासा ने अपशिष्टों के उत्सर्जन को क्रमशः बढ़ावा दिया है। ठोस अपशिष्टों का विस्तार भू–सतह से बढ़कर जल मण्डल एंव वायु मण्डल के बाहर अन्तरीक्ष में भी ब्याप्त हो गया है। कृत्रिम उपग्रहों के अवशेष आज अन्तरीक्ष को भी प्रदूषित कर रहें है। जिसके कारण पर्यावरण अवनयन, जलवायु परिवर्तन, मानव एवं जीव जन्तुओं के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। अपशिष्टों का निस्तारण और उनका प्रबंधन वैश्विक समस्या के रूप में उभरा है। प्रस्तुत शोध लेख में आजमगढ नगर (उत्तर प्रदेश) में ठोस अपशिष्ट के उत्सर्जन एंव निष्पादन का विश्लेषण करने का प्रयत्न किया गया है।

मुख्य शब्द : अपशिष्ट, उत्सर्जन, निष्पादन, अप्रयोज्य, निष्क्रिय, उदासीनता, पिपासा, अवनयन।

Introduction

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मानव अपनी वैज्ञानिक, तकनीकी एवं औद्योगिक प्रगति से बहुत ही उत्साहित है, क्योंकि इसके द्वारा ही वह अनेक सुख–सुविधाओं को उपलब्ध कराने में सक्षम हुआ हैं। परिणामतः विभिन्न प्रकार की सुख–सुविधाओं एवं सेवाओं में अभिवृद्धि के कारण जहॉ एक ओर मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ है, वहीं पर्यावरण अवनयन एवं प्रदूषण की समस्या का भी उदय हुआ है जिसे आज सम्पूर्ण विश्व चिन्तित है।

20वीं शताब्दी में जनसंख्या के विस्फोट, तीव्र औद्योगीकरण, नगरीय केन्द्रों में जनसंख्या का बृहद् सकेन्द्रण और मानव के अन्दर अधिकाधिक उपभोग की लालसा एंव ''प्रयोग करो एंव फेंको'' जैसी संस्कृति के कारण ठोस अपशिष्टों के उत्सर्जन में निरन्तर वृद्धि हो रही है। परिणामतः निस्तारण और प्रबन्धन की उचित व्यवस्था न होने से पर्यावरण की गुणवत्ता में पर्याप्त कमी आ गयी है। पर्यावरण अवनयन के विविधि आयामों में से ठोस अपशिष्टों पदार्थों की बेतहासा वृद्धि एक प्रमुख आयाम है जिससे पर्यावरण, मानव जीवन, मानव की सामाजिक–आर्थिक गतिविधियों तथा उसके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

ठोस अपशिष्ट का पर्यायवाची शब्द कचरा, कूड़ा–करकट, अप्रयोज्य, निष्क्रिय, बेकार, मूल्यहीन, त्याज्य वस्तु, या पदार्थ आदि होता है। इसलिए ठोस अपशिष्ट तत्व ऐसे पदार्थों को कहते हैं, जो मूलतः प्रयोग हो जाने के बाद उसका अवशेष भाग बेकार या निरर्थक या किसी प्रयोग के लायक नहीं होता है। अतः ठोस अपषिष्टों को परिभाषित करते हुए यूरोपीय यूनियन ने स्पष्ट किया है कि –''ऐसी वस्तुएं या

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

पदार्थ जिन्हें धारण करने वाला त्याग देता है या त्यागने का इरादा रखता है या उससे त्यागने की अपेक्षा होती है, को ठोस अपशिष्ट कहते हैं।''[1]

उद्देश्य–

वर्तमान वैज्ञानिक युग में ठोस अपशिष्टों की बेतहासा बढ़ती मात्रा न केवल पर्यावरण को वरन् जीव–जन्तुओं एंव मानव के सामाजिक–आर्थिक एंव उसके स्वास्थ पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है, जिससे आज सम्पूर्ण विश्व इनके उत्सर्जन एंव प्रबन्धन को लेकर चिन्तित है। इसलिए इस लेख का उद्देष्य आजमगढ़ नगर में ठोस अपशिष्टों के उत्सर्जन एंव निस्पादन की प्रक्रियाओं पर प्रकाश डालना है।

विधितंत्र–

प्रस्तुत लेख में द्वितीयक आँकडों का संकलन आजमगढ नगर पालिका एंव उ0 प्र0 प्रदूषण बोर्ड कार्यालय से संकलित किया गया है तथा प्राथमिक आँकडों का संग्रह नगर के 25 वार्डों में से 40 प्रतिशत अर्थात 10 वार्डों को चयनित कर उसके 300 परिवारों का सर्वेक्षण द्वारा किया गया है, इसके लिए प्रश्नावली, साक्षात्कार एंव समूह चर्चा उपागम अपनाया गया है। प्राप्त आँकडों के विश्लेषण हेतु सामान्य विश्लेषणात्मक विधियों का उपयोग किया गया है, जिसके आधार पर सामान्य निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय–

आजमगढ़ नगर पूर्वी उत्तर प्रदेश का राजनैतिक, प्रशासनिक, व्यवसायिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण नगर है। जो तमसा नदी के पावन तट पर स्थित है। यह जनपद अनेक ऋषियों की पावन भूमि रही है। आजमगढ़ नगर तमसा (टोन्स) नदी के किनारे 26^0 03′ उत्तरी अक्षांश एवं 83^0 11′ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है (चित्र संख्या 1)। यह जनपद पूर्व में मऊ एवं गाजीपुर, पश्चिम में सुल्तानपुर एवं अम्बडेकर नगर, उत्तर में गोरखपुर तथा दक्षिण में जौनपुर के मध्य स्थित है। आजमगढ़ नगर तमसा (टोन्स) नदी के दोनो किनारो पर बसा हुआ होने के कारण नगरीय अवस्थापना में बाधित होती है। आजमगढ़ नगर देश एवं प्रदेश के प्रमुख नगरों से सड़क मार्ग एवं रेल मार्ग द्वारा सम्बद्ध है। आजमगढ़ नगर से प्रदेश की राजधानी लखनऊ 296 किमी0, वाराणसी 90 किमी0, प्रयागराज 165 किमी0 एवं गोरखपुर 112 किमी0 की दूरी पर स्थित हैं। छठी शताब्दी ई0 पू0 में आजमगढ़ जनपद कोशल महाजनपद (वर्तमान अयोध्या) का एक भाग था। वर्ष 1665 में विक्रमाजीत के पुत्र 'आजम' द्वारा आजमगढ़ नगर की नींव रखी गयी। 18 सितम्बर, 1832 को आजमगढ़ एक स्वतंत्र जनपद बना, इससे पूर्व में यह प्रयागराज सूबे का एक भाग था। आजमगढ़ नगर सांस्कृतिक एवं बौद्धिक धरातल पर प्राचीन काल से ही अपनी अमिट छाप छोड़ता रहा है। प्राचीन काल में जहाँ यह नगर दत्तात्रेय एवं दुर्वाशा ऋषि का तपोस्थली रहा। वहीं आधुनिक काल में हिन्दी साहित्य के प्रमुख स्तम्भ अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' एवं पं0 राहुल सांकृत्यायन की जन्मस्थली भी है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार आजमगढ़ नगर की जनसंख्या 93,521 थी जो 2011 में बढ़कर 1,10,983 हो गयी। आजमगढ़ नगर की सबसे बड़ी समस्या अपशिष्टो का निस्तारण है। अतः इसके वैज्ञानिक विधि सें पर्यावरण अनुकूल निस्तारण की आवश्यकता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

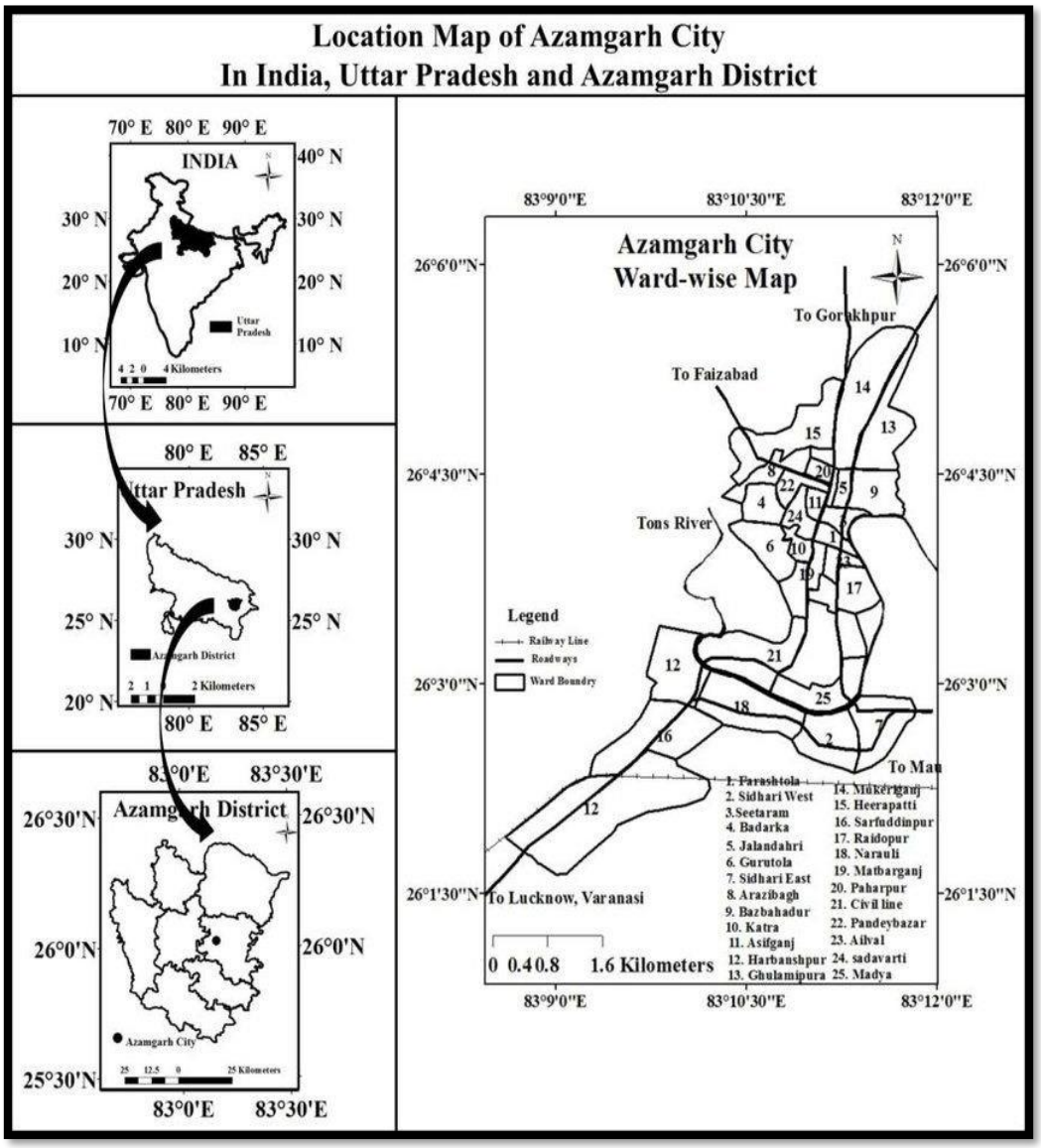

(चित्र संख्या 1)

आजमगढ नगर में ठोस अपशिष्टों का उत्सर्जन

आजमगढ नगर में कुल ठोस अपशिष्ट के निकलने की तथा उसके स्रोतों तथा प्रकारों का कोई उपयुक्त आंकड़ा उपलब्ध नही है। फिर भी नगर पालिका से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार नगर में प्रतिदिन 300 मैट्रीक टन कूड़ा उत्सर्जित होता है।[2] लेकिन पूरे नगर में कूड़ों के अत्र–तत्र भण्डार को देखते हुए ऐसा लगता है कि नगर में उत्सर्जित कूड़े की मात्रा इस सरकारी आकड़े की अपेक्षा बहुत अधिक है।

नगर के इन ठोस अपशिष्टों के उत्सर्जन का विश्लेषण करने के लिए कुल वार्डों का 40 प्रतिशत वार्ड अर्थात् 10 वार्ड 300 परिवारों का ब्यक्तिगत सर्वेक्षण किया गया इन चयनित परिवारों की कुल जनसंख्या 2095 थी। नगर के इन चयनित परिवारों द्वारा प्रतिदिन कुल 128.85 किलोग्राम ठोस अपशिष्ट उत्सर्जित होता है। इस प्रकार महानगर के इन चयनित वार्डों में प्रति व्यक्ति/दिन औसतन 429.5 ग्राम ठोस अपशिष्ट उत्सर्जित हो रहा है जो राष्ट्रीय मानक के बहुत करीब है। नगर के इन चयनित वार्डों से उत्सर्जित 128.

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

85 किलोग्राम ठोस अपशिष्ट में 77.79 प्रतिशत अर्थात 100.232 किलोग्राम जैव अपघटीत अपशिष्ट होता है। सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्षो के अनुसार कुल ठोस अपशिष्ट का 25.04 प्रतिशत रसोई घर से, 52.84 प्रतिशत षुओं तथा अन्य जन्तुओं के मल–मूत्र तथा अवशेष, 6.52 प्रतिशत कागज, 2.33 प्रतिशत प्लास्टिक, 2.96 प्रतिशत धातुओं तथा 9.31 प्रतिशत अन्य रूपो में उत्सर्जित होता है जिसे तालिका संख्या–1 में प्रदर्शित किया गया है।

चयनित परिवारों द्वारा विभिन्न स्रोत्रों से ठोस अपषिष्टों का उत्सर्जन

ठोस अपशिष्टों के स्रोत	प्रतिशत
रसोई	25.04
पशुओं तथा अन्य जन्तुओं	52.84
पेपर	6.52
प्लास्टिक	2.33
धातुओं	2.96
अन्य	9.31
कुल	**100**

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण

ठोस अपशिष्टों का निपटान

आजमगढ नगर में ठोस अपशिष्टों के प्रबन्धन की कोई व्यवस्था अभी तक नही है। नगर में एकत्र होने वाले ठोस अपशिष्टों को प्रतिदिन उठाने का कार्य नगर पालिक द्वारा किया जाता है। नगर पालिक के आकड़ों के अनुसार विभिन्न साधनों द्वारा 297 मैट्रीक टन कचरों को उठाकर पहले विभिन्न स्थानों पर बनें कूड़ेदानो एंव कूड़ा पड़ाव केन्द्रों पर पहुचाते है। शेष बचे 3 मैट्रीक टन ठोस अपशिष्ट सड़कों एंव गलियों में सड़ता–गलता है, जिन्हें नगर पालिका द्वारा साप्ताहिक सफाई अभियान के तहत उठाया जाता है।

नगर पालिक द्वारा गली, मुहल्लों तथा अन्य उत्सर्जित स्थलों से निकलने वाले ठोस अपशिष्टों को विभिन्न स्रोतो के द्वारा उठाकर कूड़ा पड़ाव केन्द्रों पर एकत्रित किया जाता है, ऐसे कूड़ा एकत्रिकरण स्थलों की कुल संख्या महानगर में 7 है। 3 कूड़ा पड़ाव आधुनिक ढंग से पक्का बना है एंव ष्षेष 4 कूड़ा पड़ाव केन्द्र खुलें है। नालियों से निकलने वाले ठोस अपशिष्ट को नालियों के किनारे इनके सूखने तक छोड़ दिया जाता है, सूखने के बाद उन्हे उठाया जाता है। कूड़ा एकत्रीत स्थलों पर एकत्रीत कूड़ें को उठाकर शहर के विभिन्न भागों में स्थित खाली भूमियों, सड़कों और बन्धों के किनारे स्थित निची भूमि, जलीय क्षेत्र या खाली भूमि में बिना किसी उपचार के फेक दिया जाता है।

कुड़ा निपटान स्थल–

सम्पूर्ण शहर का त्वरित सर्वेक्षण कर नगर पालिक द्वारा ठोस अपशिष्टों के निस्तारण स्थलों का अभिलेखन किया गया। शहर के कूड़े प्रमुखतः करतालपुर बाईपास के किनारे, इस बन्धें और नदी के मध्य तक फैले बंधे के किनारे निम्न भूमियों में फेंका जाता है। दूसरा प्रमुख निस्पादन क्षेत्र बैठौली बाईपास के किनारे तथा आजमगढ वाराणसी मार्ग पर रोड. किनारे निम्न भूमियों में फेंका जाता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

शहर के ठोस अपशिष्ट का बहुत बड़ा निष्पादन केन्द्र मुबारकपुर में स्थित है जो नगर पालिक द्वारा अधिग्रहित किया गया है, जहॉ पर नगर के ठोस अपशिष्टों के प्रबन्धन के लिए इकाई निर्माणाधीन है। इस कुड़ा निस्तारण स्थल पर नगर का कुछ मात्रा में अपशिष्ट निस्तारीत होता है, जिसमें अधिकांशतः आग लगी रहती है और वह दिनों–रात जल कर आवांच्छीत गैस निष्पादित करते रहते है जो पर्यावरण प्रदूषण करने के साथ–साथ उन क्षेत्रों के निवासियों को घूटन और बदबू देते है। कुड़ा निस्तारण के अन्य स्थल आजमगढ बलीया मार्ग, आजमगढ गाजीपुर मार्ग, आजमगढ लखनऊ मार्ग जहॉ नगर पालिक द्वारा ठोस अपशिष्टों का निस्तारण बिना किसी अनुमति के किया जाता है।

कचरा निस्तारण स्थलों पर छुट्टा पशु तथा अन्य जीव–जन्तु बिना टोक, न केवल घुमते है बल्की इनको खाते भी रहते है जो उनके लिए अस्वास्थ्यकर तथा कभी–कभी जान लेवा भी होता है। इन कूड़ों कचरों पर कुड़ा एकत्रित करने वाले बालक–बालिकायें तथा प्रौढ़, स्त्री–पुरुष नंगे हाथ पैर कूड़े में से उपयोगी प्लास्टिक, खनिज, कपड़ा, गत्ता, पेपर आदि बिनते रहते है जो इस गन्दगी के कारण विभिन्न प्रकार के रोगों विशेषकर त्वचा ,स्वांस और अन्य प्रकार के रोगों से ग्रसित होकर बहुत जल्दी काल कलवीत हो जाते है।

आजमगढ नगर में ठोस अपशिष्टों के प्रबन्धन की कोई व्यवस्था का न होना सरकार एंव नगर पालिक की उदासीनता को प्रकट करता है, क्योकि कई वर्ष पूर्व में अधिग्रहित की गयी कूड़ा निस्तारण भूमी आज भी इनकी उदासीनता के चलते उसी तरह पड़ी है जिस पर कोई भी निर्माण सम्पंन नही हो पाया है।

अतः सरकार एंव नगर पालिक को त्वरित कार्यवाही करते हुए, इस स्थल पर कुड़ा उपचार केन्द्र निर्माण का कार्य शुरु कर देना चाहिए, ताकि कुड़ों के निष्पादन का उचित प्रबंधन की ब्यवस्था हो सके इससे जहॉ नगर की स्वच्छता, पर्यावरण सुरक्षित होगी वही निवासियों के स्वास्थ पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव भी समाप्त होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. European Environment Agency,(2013)Managing Muncipal Solid Waste-- A Review of Achievements in 32 European Countries, Luxembourg.
2. Yadav, D.P.(2019): Waste Generation, Their Disposal and Environmental Impacts in Gorakhpur City: A Geographical Analysis, Unpublished Ph.D. Thesis , DDU Gorakhpur University.
3. Vision Document For Azamgarh City,(2016-17) Nagar Palika, Azamgarh
4. Status Report on Municipal Solid Waste Management: Central Pollution Control Board, Ministry of Environment & Forests, Delhi.
5. Verma, S.S., (2009)*Geo-Hydrological study of Gorakhpur city*. Report, sponsored by the Rockefeller Foundation, Published by GEAG, Gorakhpur.
6. Verma,S.S.(1977) Urban Morphology of Gorakhpur, : A Geographical Study.*Yuva Bhoogol Vid Patrika* 1(1):30-41
7. Verma, C.M. (2007) Civic Amenities in The Slums of Gorakhpur City, Unpublished Ph.D. Thesis, Department of Geography, DDU Gorakhpur University,Gorakhpur.
8. Gupta,D.P.(1998) Gorakhpur City: Its urban land use, problem and planning. Unpublished Ph.D. Thesis, Department of Geography. BHU, Varanasi.